PAGE NO.:
DATE: 29/06/21

Pluralism — अनेकत्ववाद वह तत्वमीमां-सक सिद्धांत है जो संख्या की दृष्टि से मूलभूत तत्व को अनेको मानता है, स्वरूप की दृष्टि से वह कुछ भी हो सकता है - जड़ द्रव्य के स्वरूप का, या चेतन स्वरूप का या दोनो से तटस्थ स्वरूप का। अनेकत्ववाद के अनुसार विश्व की अनुभूत अनेकता या विविधता मौलिक है, उसे किसी स्तर पर एक या दो में परिवर्तित नही किया जा सकता। यह सिद्धांत उस एकत्ववादी सिद्धांत का विरोधी है जो यह मानता है कि विश्व की अनुभूत विविधता प्रतीति है। मौलिक तत्व तो एकता है क्योंकि मूलभूत तत्व एक ही है। इस एकत्ववादी सिद्धांत के विरुद्ध अनेकत्ववाद मानता है कि अनेकता मौलिक है। विश्व की वस्तुएँ इन अनेको तत्वों के द्वारा निर्मित है तथा इन तत्वों के अलग होने से उनका विनाश हो जाता है। सारा विश्व अनेको तत्वों एवं विषयों का समूह है, उनमे से किसी को किसी के अन्तर्गत अन्तर्भूत नही किया जा सकता। विश्व की वस्तुओं में मात्र बाह्य सम्बन्ध है। जो कभी भी टूट सकता है और फिर कायम

हो सकता है।

अनेकत्ववाद का सबसे सहज एवं सशक्त समर्थन हमारा साधारण अनुभव है सामान्य दैनिक अनुभव हमें यह बतलाता है कि संसार में अनेको तत्व है और उनमे परस्पर कुछ इस प्रकार की स्पष्ट भिन्नताएं है कि हम उन सबो को किसी एक मौलिक सत्ता के रूप में परिवर्तित कर नही देख सकते। प्रत्यक्ष रूप से जो दृश्यमान जगत है उसकी अवेहलना कर यदि हम यह प्रमाणित करने में लगे रहे कि मौलिक तत्व तो एक ही है और अनेकता मात्र प्रतीति है, तो यह स्पष्ट रूप से यह वास्तविकता की अवेहलना कर केवल रहस्यवाद में प्रवेश करने के अलावा कुछ नही है।

अनेकात्वाद का दूसरा समर्थन उन विचारो से मिलता है जो सम्बन्धों को बाह्य मानते है। तथ्यों के बीच किस प्रकार से सम्बन्ध है? इस प्रश्न के उत्तर स्वरूप दो मत है। एक मत मानता है कि सम्बन्ध आन्तरिक हुआ करते है तथा दूसरा मत मानता है कि सारे सम्बन्ध बाह्य हुआ करते है।